© 2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 1 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

पाश्चात्य संस्कृति का भारतीय संस्कृति पर अनुकूल व प्रतिकूल प्रभाव

डॉ0 सारिका सक्सेना
M5/104, अल्फा कार्प, मेरठ वन कालोनी
मोदीपुरम वाईपास मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत।

सरांश – संस्कृति और सभ्यता एक दूसरे के पूरक है। जैसे हम इनमें से यदि एक शब्द का नाम लेते हैं तो दूसरा स्वयं हमारे मस्तिष्क मे आ जाता है। बुद्धि और न्याय पर आधारित संस्कृति, सभ्य संस्कृति कहलाती है। भविष्य में संघर्ष सभ्यताओं के बीच होगा जो सभ्यता प्रभावी होगी उसकी संस्कृति धीरे धीरे विश्व में फैलेगी। प्रस्तुत शोध पत्र में प्राचीन भारतीय संस्कृति और वर्तमान मे उस पर हावी पाश्चात्य संस्कृति के अनुकूल और प्रतिकूल प्रभावों का वर्णन किया गया है और भविष्य मे हमारे देश के समुचित विकास के लिए दोनों संस्कृतियों में सामंजस्य स्थापित करने के लिए बताया गया है।

मुख्य शब्द:- संस्कृति, अंधानुकरण, अनुकूल, विकास।

आध्यात्मिकता से युक्त भारतीय संसकृति त्याग और वैराग्य पर आधारित है। जबकि पाश्चात्य संस्कृति भोग-विलास से युक्त भौतिकता पर आधारित रही है। आज भी विश्व के विभिन्न देशों में भारतीय संस्कृति, दर्शन और ज्ञान को अपनाया जा रहा है। जब कि इसके विपरीत भारत में पाश्चात्य संस्कृति का अन्धानुकरण करने वाले व्यक्ति इसको रुढ़िवादिता कहकर इसका तिरस्कार कर रहे हैं। किसी भी देश की संस्कृति, आदर्शों एवं मूल्यों को निरुपित करती है। भारतीय संस्कृति के चार तत्व धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का महत्व जीवन के हर अंग मे स्वीकार किया गया है। ये चारों तत्व मानव के लिए अत्यन्त कल्याणकारी है जब कि पाश्चात्य संस्कृति में केवल दो तत्व अर्थ और काम को ही महत्ता प्रदान की गयी है। हमारी संस्कृति मे अर्थ अर्थात् धन को बहुत अधिक महत्व नही दिया जाता है, इसमें तो यह माना जाता है –

साईं इतना दीजिए, जा में कुटुम समाय।

मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय।। (कवीर ग्रंथावली)

संस्कृति के दूसरे तत्व 'काम' ने भारतीय युवा को भ्रमित कर दिया है आज के संगीत, फिल्म और भोजन आदि ने मानव के मस्तिष्क पर विपरीत प्रभाव डाला है। इसके विपरीत भारतीय संस्कृति में प्राचीन शिक्षा गुरुकुल मे वैदिक ज्ञान पर आधारित थी। जिसमें ऋषि मुनि और गुरुओं ने जीवन को संस्कार की विज्ञान सम्मत प्रक्रिया के साथ जोड़कर मानव के लिए कल्याणकारी बनाया जब कि पश्चिमी संस्कृति में युवा पीढ़ी ने अभिवादन को महत्व देने वाली संस्कृति के आदर्शों को भुला दिया है, जिसके लिए कहा गया है –

अभिवादन शीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।

चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्धर्मो यशोबलम।। (मनुस्मृति)

मानव एक विवेकशील प्राणी है जो इस परिर्वतनशील और नश्वर संसार में पदार्पण करते समय असहाय भाग होता है। मानव की जन्मजात प्रवृत्ति और संसार के अन्य जीवों की प्रवृत्ति एक समान होती है परन्तु समय के साथ-साथ शिक्षा-संस्कार और परम्पराओं के माध्यम से मानव के व्यवहार मे परिवर्तन होता है। इस परिवर्तन में कल्याण की भावना निहित होती है। भावना के इस कल्याणकारी रूप को ही संस्कृति कहा जाता है। संस्कृति से आशय, देश या समाज मे मानव के रहन-सहन, खान-पान, व्यवहार, आचार-विचार, रीति-रिवाज, कला-कौशल, संगीत-नृत्य, भाषा-साहित्य, धर्म-दर्शन, आदर्श एवं विश्वास के उस विशिष्टतम रूप से है जिसमें आस्था और पहचान समाहित होती है। भारत में प्राचीन संस्कृति का विचलन, ब्रिटिश साम्राज्य के आगमन से माना जाता है, यद्दपि ब्रिटिश साम्राज्य से पूर्व भी अन्य शासकों ने भारतीय संस्कृति को प्रभावित किया और ब्रिटिश शासकों को भी यह विश्वास दिलाय कि भारतीय संस्कृति को प्रभावित करके इस देश पर शासन किया जा सकता है। वास्तव में भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव 19 वीं शताब्दी से प्रारंभ हुआ। वर्तमान में पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव को कुछ बिन्दुओं के अन्तर्गत समझा जा सकता है। जैसे- शिक्षा प्रणाली पर प्रभाव, सामाजिकता पर प्रभाव, परम्पराओं पर प्रभाव, धार्मिकता पर प्रभाव, संस्करों पर प्रभाव आदि।

उपरोक्त व्याख्या मे भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति के प्रतिकूल प्रभावों को वर्णित किया गया है जबकि दूसरे पहलू से यदि अनुकूल प्रभावों को भी वर्णित किया जाय तो अधिक उपयोगी होगा। अनुकूल प्रभावों में हम इस नयी संस्कृति के द्वारा भारतीय संस्कृति

में दूषित प्रथाओं और कुरीतियों के अन्त को देखते हैं, जैसे- सती प्रथा, अग्नि परीक्षा, दहेज प्रथा, पर्दा प्रथा, दास प्रथा, वाल विवाह, विधवा विवाह, जौहर प्रथा। पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से उक्त अमानवीय प्रथाओं पर रोक लगी। भारतीय समाज में इन दूषित कुरीतियों के प्रति चेतना को पश्चिमी सभ्यता का अनुकूल प्रभाव माना जा सकता है।

उपरोक्त विषय में अनुकूल और प्रतिकूल प्रभावों का अध्ययन करने के उपरान्त अब हम पाश्चात्य संस्कृति को 'विकास' की दृष्टि से देखतें है। कुछ भारतीय, प्राचीन संस्कृति का ह्रास होने के बाद पाश्चात्य संस्कृति के अग्रसर होने को भारत का विकास मानते हैं। परन्तु हमें दोनों में सामंजस्य रखते हुए अपने देश की प्रगति के बारे में सोचना होगा अपनी संस्कृति को बचाते हुए। क्योंकि विकास के लिए 'परिवर्तन प्रकृति का नियम' है।

परन्तु परिवर्तन प्रकृति का नियम है इसके साथ हमें यह भी ध्यान देना होगा कि परिवर्तन ऐसा हो जो हमें पतन की ओर न ले जाये। क्योंकि पूरा विश्व आज भारतीय संस्कृति से प्रभावित है और भारतीय युवाओं की दीवानगी चिन्ता का विषय है। हमारे परिवर्तन का अर्थ सकारात्मक होना चाहिए जो हमें अच्छाई से अच्छाई की ओर ले जाता है। युवाओं को यह सोचना होगा कि यदि भारतीय संसकृति न रही तो हम अपना अस्तित्व खो देंगें परन्तु देश के विकास के लिए पश्चिमी सभ्यता के सकारात्मक पहलू पर ध्यान देना भी हमारे लिए अत्यन्त आवश्यक होगा।

निष्कर्ष – हमारी संस्कृति विश्व का सर्वश्रेष्ठ संस्कृति है जो सामाजिक आदर्शों को लेकर चलती है। वर्तमान में युवा शक्ति को परिवर्तन के साथ अपनी प्राचीन संस्कृति को ध्यान में रखने की आवश्यकता है। परिवर्तनों को स्वीकार करते हुए हमें अपनी संस्कृति के संरक्षण के उपायों को अपनाना होगा तभी हम विश्वस्पर्धा का मुख्य अंग बन सकते हैं।

सन्दर्भ सूची –

1. हिन्दी-साहित्य कोश
2. भारतीय परम्परा का आधुनिकीकरण – योगेन्द्र सिंह, रावत पब्लिकेशन, जयपुर
3. कुरुक्षेत्र मासिक पत्रिका
4. w.w.w/wikipedia/.com